❁ 21 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ **ज्ञान-**

1] हमने ही सतयुग से लेकर जन्म लेते 84 का चक्र पूरा किया। सारे समय दूसरा कोई धर्म नहीं था। सारे झाड़ की स्मृति आई है। हम देवता थे फिर रावण राज्य में आ गये तो देवी-देवता कहलाने के लायक न रहे इसलिए धर्म ही दूसरा समझ लिया। और किसका भी धर्म बदलना नहीं है। जैसे क्राइस्ट का क्रिश्चियन धर्म, बुद्ध का बौद्ध धर्म ही चला आता है। सबकी बुद्धि में है बुद्ध ने फलाने टाइम धर्म स्थापन किया। हिन्दुओं को अपने धर्म का पता ही नहीं है कि हमारा हिन्दू धर्म कब से शुरू हुआ, किसने बनाया? लाखों वर्ष कह देते। सारे सृष्टि चक्र का नॉलेज तुम बच्चों को ही है, इसको कहते हैं ज्ञान-विज्ञान। उन्होंने विज्ञान भवन नाम भल रखा है परन्तु बाप उसका अर्थ समझाते हैं– ज्ञान और योग, रचता और रचना के आदि, मध्य, अन्त का ज्ञान, अभी तुम समझते हो कि हम भी नहीं जानते थे, नास्तिक थे। सतयुग में तो यह ज्ञान हो नहीं सकता।

2] हम आत्मा अविनाशी हैहं, उनमें पार्ट भी अविनाशी है जो चलता ही रहेगा। यह बनी बनाई बन रही..... इसमें नई बात कोई एड वा कट नहीं हो सकती है। कोई भी मोक्ष को पा नहीं सकते। कोई मुक्ति मांगते हैं, मुक्ति अलग है, मोक्ष अलग है। यह भी स्मृति में रखना है।

3] मालूम है कि हम याद से यह बनेंगे तो कौन याद नहीं करेगा। परन्तु यह युद्ध का मैदान है, मेहनत करनी पड़ती है इतना ऊंच पद पाने के लिए। यह भी बच्चों को स्मृति आई है कि बेहद के बाप से हम ऊंच ते ऊंच वर्सा लेते हैं, कल्प-कल्प लेते हैं। तुम्हारे पास बहुत आयेंगे, आकर महामन्त्र लेंगे मनमनाभव का। मनमनाभव का अर्थ है अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह है महान् मन्त्र, महान् आत्मा बनने के लिए। वह कोई महात्मा है नहीं। महात्मा तो वास्तव में श्रीकृष्ण को कहा जाता है क्योंकि वह पवित्र है। देवतायें सदैव पवित्र रहते हैं। देवताओं का है प्रवृत्ति मार्ग, सन्यासियों का है निवृत्ति मार्ग।

4] यह जानते हैं, क्राइस्ट को इतना समय हुआ है, फलाने को इतना समय हुआ धर्म स्थापन किये, लेकिन फिर जायेंगे कब? यह पता नहीं है। कल्प की आयु ही लम्बी कर दी है। अभी तुम जानते हो यह तो विनाश की तैयारियाँ हो रही हैं। उन्हों की है साइन्स, तुम्हारी है साइलेन्स। तुम जितना साइलेन्स में जायेंगे उतना वह विनाश के लिए अच्छी-अच्छी चीजें तैयार करते रहेंगे।

5] भक्ति वाले ज्ञान को नहीं जानते हैं। अभी तुम भक्ति को भी जानते हो तो ज्ञान को भी जानते हो। सारी स्मृति आई है– भक्ति कब शुरू होती है, फिर कब पूरी होती है। बाप कब ज्ञान देते हैं, पूरा कब होगा, सब स्मृति है। नम्बरवार तो हैं ही। किसको बहुत स्मृति है, किसको कम। जिन्हों को बहुत स्मृति रहती है, वह ऊंच पद पायेंगे। स्मृति रहे तब औरों को भी समझायें। वन्डरफुल स्मृति है ना। आगे तुम्हारी बुद्धि में क्या था। भक्ति, जप, तप, तीर्थ करना, माथा टेकना, सारी टिप्पड़ ही शुरू से भक्ति की है। जानते हो हमने पहले-पहले शिव की भक्ति की, फिर देवताओं की। और कोई को भी यह स्मृति नहीं है, तुमको रचना के आदि-मध्य-अन्त, भक्ति आदि की सब स्मृति है। आधाकल्प भक्ति करते-करते गिरत ही आये हो।

...2

❁ 21 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

[2]

✺ योग-

1] मीठे बच्चे– बाप ने तुम्हें संगम पर जो स्मृतियाँ दिलाई हैं, उसका सिमरण करो तो सदा हर्षित रहेंगे।

2] सदा हल्का रहने के लिए इस जन्म में जो-जो पाप हुए हैं, वह सब अविनाशी सर्जन के आगे रखो। बाकी जन्म-जन्मान्तर के पाप जो सिर पर हैं उसके लिए याद की यात्रा में रहो। याद से ही पाप कटेंगे, फिर खुशी रहेगी। बाप की याद से आत्मा सतोप्रधान बन जायेगी।

3] ऊंच पद पाने के लिए बहुत मेहनत करनी है। मुख्य मेहनत है योग की। यह है याद की यात्रा, जो बाप के सिवाए और कोई सिखला नहीं सकते।

4] जितना तुम योग में रहेंगे, उतना पाप भस्म होंगे और पद भी ऊंच मिलेगा, आयु भी बड़ी होगी।

✺ धारणा-

1] ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को अच्छी तरह समझ, स्मृति में रख दूसरों को भी स्मृति दिलानी है। ज्ञान अंजन देकर अज्ञान अंधारे को दूर करना है।

2] ब्रह्मा बाप समान कुर्बान जाने में पूरा फालो करना है। शरीर सहित सब खलास हो जाना है इसलिए इससे पहले ही जीते जी मरना है। ताकि अन्त समय में कुछ भी याद न आये।

3] स्वमान की सीट पर स्थित रह सर्व को सम्मान देने वाले माननीय आत्मा बनो।

✺ सेवा-

1] स्मृति में होगा तो औरों को भी स्मृति दिलायेंगे। तुम्हारा धन्धा ही यह है। बाप ने जो स्मृति में लाया है, वह फिर औरों को भी स्मृति दिलाओ तब ऊंच पद पा सकेंगे।

2] अभी तो दु:ख के पहाड़ गिरने हैं। तुम बच्चों को पुरूषार्थ करना है, यह गिरने से पहले हम याद की यात्रा से विकर्म विनाश करें। सबको तुम यही समझाते हो, तुम्हारे पास हजारों आते हैं। तुम मेहनत करते हो भाई-बहनों को रास्ता बताने की।

3] ज्ञान और भक्ति की स्मृति आई है। गोया तुम सारे ड्रामा को नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार जान गये हो। जो जितना अच्छी रीति जानते हैं वह समझा भी सकते हैं। समझाना तो बच्चों को ही है। गायन भी है सन शोज़ फादर। बाप बच्चों को समझायेंगे, बच्चे फिर और भाइयों को समझायेंगे।

4] अब बाप कहते हैं– बच्चे, मामेकम् याद करो तो पाप कटें। एक-दो को यही सावधानी देते रहो। घूमने-फिरने आपस में जाओ तो भी यह बातें करो। सारा झुण्ड तुम्हारा इस याद की अवस्था में चक्र लगाये तो तुम्हारे शान्ति का प्रभाव बहुत पड़ेगा।